श्रीरामचरितमानस

दोहा:

देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥
257॥

अर्थ: श्रीरघुवीर रघुनाथ जी की ओर देखकर सीता जी धीरज धरकर देवताओं को मना रही हैं। उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू भरे हैं और शरीर में रोमांच हो रहा है।

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥
258॥

अर्थ: प्रभु श्रीरामचन्द्र जी को देखकर फिर पृथ्वी की ओर देखती हुई सीता जी के चंचल नेत्र इस प्रकार शोभित हो रहे हैं, मानों चन्द्रमण्डल रूपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों।

लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥259॥

अर्थ: इधर जब लक्ष्मण जी ने देखा कि रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्र जी ने शिवजी के धनुष की ओर ताका है तो वे शरीर से पुलकित हो ब्रह्मांड को चरणों से दबाकर निम्नलिखित बचन बोले-॥

कमलाकुमार

Scanned with CamScanner

दोहा :

राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥२६०॥

अर्थ : श्रीरामजी ने सब लोगों की ओर देखा और उन्हें चित्र में लिखे हुए से देखकर फिर कृपाधान श्रीरामचन्द्र जी ने सीताजी की ओर देखा और उन्हें विशेष व्याकुल जाना॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार